International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 463-467

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 463-467
www.allresearchjournal.com
Received: 22-04-2015
Accepted: 26-05-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

संत रविदास वाणी में ब्रहम का स्वरूप

डॉ0 शिवदत्त शर्मा

किसी भी दार्शानिक, चिन्तक की विचारधारा का विश्लेषण करने के लिए उनके दर्शन की मुख्य शाखाओं का चिंतन एवं मूल्यांकन किया जाता है। संक्षेपतः एक दार्शनिक विचारधारा को निम्न उपभागों में विभक्त किया जा सकता हैः–

1. आध्यात्मिक दर्शन
2. सामाजिक दर्शन
3. धार्मिक दर्शन
4. नैतिक दर्शन

आध्यात्मिक दर्शनः– आध्यात्म दर्शन किसी भी दार्शनिक चिन्तन का मूल आधार माना जाता है। आध्यात्म दर्शन में जिन बिन्दुओं पर चिन्तन होता है, वे इस प्रकार हैंः–
क) ब्रह्म **ख)** जीव **ग)** जीवात्मा **घ)** माया **ङ)** जगत **च)** मोक्ष **छ)** पुनर्जन्म एवं मृत्यु

भारतीय दर्शन में ब्रहम का संकल्प और संत रविदास वाणी
भारतीय दर्शन प्राचीनतम दर्शनों की कोटि में आता है, समय के अनुसार विभिन्न धाराओं ने जहाँ इसे प्रभावित किया वहीं अनेक चिंतन धाराएँ भी इससे किसी न किसी रुप में प्रभावित रहीं। अनेक चिंतन धाराएँ समय की गति के अनुसार इसी विशाल सरिता से अनुप्राणित होती रहीं, चाहे उन धाराओं ने उसे एक पृथक नाम देकर एक पृथक पहचान के रुप में स्थापित किया परन्तु एक तथ्य तो अवश्य ही है कि अनेक परवर्ती दार्शनिक विचारधाराएँ किसी न किसी रुप से भारतीय प्राचीन धारा की ऋणी हैं और रहेंगीं क्योंकि जो आधार एवं सिद्धान्त उन्होनें अपनी पृथक विचारधारा में अपनाए, मूलरुप से वे सब प्राचीन भारतीय दर्शन में विद्यमान दिखाई देते हैं, चाहे उनके स्वरुप को परिवर्तित कर, अपनी सुविधानुसार समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अपने दर्शन में सम्मिलित किया हो।

(क) ब्रहम का संकल्प :– वेदों में ब्रहम को सर्वोपरि, सर्वशक्तिमान तथा नित्य कहा गया है। एक ही उस ब्रहम को कई रुपों में वेदों में सम्बोधित किया गया है।[1]
उपनिषदों को वेदों के अन्त में आने के कारण वेदान्त कहा जाता है। उपनिषदों की संख्या 223 से भी अधिक प्रामाणिक हो गई है, परन्तु सभी उपलब्ध नहीं हैं।
उपनिषदों में ब्रहम के दोनों स्वरुपों का सविस्तार उल्लेख मिलता है।[2] उपनिषदों में वर्णित ब्रहम (ईश्वर) सत्य, सर्वव्यापी, नित्य अनन्त और शुद्ध चैतन्य है। वही सम्पूर्ण जगत का कर्ता एवं हर्ता है। उस ब्रहम को शब्द, ॔, रुप आदि से रहित बताया गया हैं तथा उसे ही सभी प्राणियों में अवस्थित माना जाता है। उपनिषदों में ब्रहम (ईश्वर) को ज्ञाता या विषयी भी कहा गया है, जिसके द्वारा सब कुछ जाना जाता है, वह सर्वज्ञ है और ऐसे सर्वज्ञ को जानना अत्यन्त कठिन है।[3]
भारतीय दार्शनिक परम्परानुसार ही संत रविदास वाणी में ब्रहम (ईश्वर) के स्वरुप को स्पष्ट किया गया है। इसमें भी ब्रहम के दोनों रुपों का सविस्तार वर्णन है।

क) अव्यक्त ब्रह्म ख) व्यक्त ब्रहम
क) अव्यक्त ब्रह्मः– यह अव्यक्त निर्गुण ब्रहम चार रुपों में संत रविदास वाणी में उपलब्ध होता है
1) अनिर्वचनीय तत्व रुप ब्रहमः– संत रविदास वाणी में अनिर्वचनीय तत्व के रुप में ब्रहम का संकल्प अत्यंत सरल एवं रुचिपूर्ण ढंग से किया गया है। संत रविदास वेदों एवं उपनिषदों में अभिव्यक्त विचारधारा का सरलीकरण करते हुए स्पष्ट कहते हैं कि उस अनिर्वचनीय तत्व रुप ब्रहम को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करना अत्यन्त कठिन है, वह वास्तव में जैसा है

वैसा ही है, उस की कौन उपमा दे सकता है।

कहै रविदास अकथ कथा, उपनिषद् सुनी जै।
जस तूं तस तूं ही, कस औपम दी जै।।[4]

इसके अतिरिक्त अनिर्वचनीय तत्व (ब्रहम) के लिए अलख, अरुप, अगम अगोचर, अक्षर आदि शब्दों का प्रयोग भी औपनिषदिक परम्परा के अनुकूल ही है।[5]
संत रविदास ने अनिर्वचनीय होते हुए भी उस ब्रहम को जगत के कण–कण में उसी प्रकार विद्यमान बताया है जैसे वेदों उपनिषदों में अभिव्यक्त है। वह ब्रहम कण–कण में वास करने वाला, सृष्टि का नियन्ता, पालक, संहारक सब कुछ है।

स्थावर जंगम कीट पतंगा, पूरि रहयौ हरि राई।[6]

संत रविदास द्वारा ब्रहम की अभिव्यक्ति में रुपकात्मक औपनिषदिक शैली भी दिखाई देती है। वाजीगर का रुपक ब्रहम की अनिर्वचनीयता और प्रकृति को सुन्दर अभिव्यक्त करता है।
एक उदाहरण देखिएः–

वाजीगर सूं रांचि रहीए, वाजी कूं मरम इनि जाना।
वाजी झूंठ सांच वाजीगर, जाना मन पति आना।।[7]

2) शब्द रुप ब्रहमः– भारतीय दर्शन में ब्रहम को शब्द रुप ब्रहम के रुप में अभिव्यक्त किया गया है। ष्प्रणवष् शब्द का प्रयोग भी ब्रहम के शब्द रुप को ही अभिव्यक्त करता है। पातंजल योग शास्त्र में तो अक्षर को ही ब्रहम की संज्ञा दी गई है।[8]
संत रविदास वाणी में भी ब्रहम के शब्द स्वरुप ब्रहम का अनेक स्थानों पर प्रयोग मिलता है, एक उदाहरण पर्याप्त होगाः–

वरन सहित जो जापै नामु, सो जोगी केवल निहकामु।[9]

यहाँ ब्रहम को शब्द रुप में अभिव्यक्त किया गया है जो पुरी तरह वैदिक परम्परा का ही अनुकरण प्रतीत होता है, जो दर्शन को परम्परा में आगे चलकर प्रचलित हो गया।

3) शून्य रुप ब्रहमः– शून्य रुप ब्रहम का उल्लेख सर्वप्रथम वैदिक दर्शन में मिलता है, आगे चलकर बौद्ध दर्शन की महायान शाखा में भी शून्य ब्रहम का उल्लेख मिलता है। फिर भी दोनों में पर्याप्त अंतर है। संत रविदास वाणी में भी सम्भवतः नाथ सिद्धों की परम्परा से होते हुए शून्य रुप ब्रहम के अनिर्वचनीय तत्व का उल्लेख मिलता है। संत रविदास जी का कथन है कि जब उस शून्य रुप ब्रहम में व्यक्ति एकमेव हो जाता है, तो फिर राम–रहीम में अभेद दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। राम–रहीम और कृष्ण–करीम का अन्तर शाब्दिक ही रह जाता है, आध्यात्मिक अभेद दृष्टि हो जाती है।
एक सुन्दर उदाहरण संत रविदास वाणी से देखिएः–

सुंनि सहज में दोऊ त्यागो, राम कहो न खुदाई।[10]

अथवा

जहां का उपज्या तहां विलाइ, सहज सुंनि में रहयो लुकाई।[11]

सम्भवतः परवर्ती दार्शनिक परम्परा में विशेषतः सिद्धों और नाथों ने इस स्वरुप का ही उल्लेख किया। सम्भावना है कि आगे चलकर संतों ने प्रभाव स्वरुप इसे अपनी वर्णन शैली में प्रयोग करना आरम्भ किया, जिसका मूल उत्स वेदों–उपनिषदों में पाया जाता है।

4) निरंजन रुप ब्रहमः– संत रविदास वाणी में ब्रहम के निरंजन स्वरुप का भी पर्याप्त विस्तार से उल्लेख हुआ है। ऐसा प्रतीत होता हे कि निरंजन स्वरुप ब्रहम का उल्लेख वाणी में उस समय अधिक प्रगाढ रुप में मिलता है जब नाम स्मरण के समय उनके चिन्तन में निर्गुण भाव की ओर उनका झुकाव अधिक हुआ है। उन्होनें वाणी में स्पष्ट किया है कि मनुष्य को ऐसे निरंजन ब्रहम की ही शरण में जाना चाहिए जिसके नाम स्मरण से बार–बार आवागमन का चक्र समाप्त हो जाए।

कहि रविदास निर्गुन ध्याओ, जिस घरि जाऔ तो बहुरि न आऔ।[12]

इस तरह भारतीय दार्शनिक परम्परा का अनुकरण उनकी वाणी में भी दिखाई देता है।

क) अव्यक्त सगुण ब्रह्मः– भारतीय दार्शनिक परम्परा अनुसार अव्यक्त ब्रहम का उल्लेख इस प्रकार मिलता है।

1. एक ब्रहम
2. सत्यस्वरुप ब्रहम
3. ज्योति स्वरुप ब्रहम

क) एक ब्रहम :– संत रविदास वाणी में भी प्रायः ऐसे ही अव्यक्त सगुण ब्रहम की चर्चा मिलती है। वेदों–उपनिषदों से ही एक ब्रहम का उदघोष दर्शन में सुनाई देता है। उपनिषदों में उल्लेख मिलता है कि एक ही सत्यस्वरुप ब्रहम को ही अनेक लोग विभिन्न नामों से पुकारते हैं।[13]
संत रविदास जी ने भी अपने मधुर एवं सरल पदों में एक ब्रहम को ही अनेक रुपों में अभिव्यक्त करने का उल्लेख किया है। वह ईश्वर एक है, और तीनों ही अवस्थाओं में एक जैसा ही रहता है। संत रविदास वाणी का एक पद इसका सुन्दर उदाहरण हैः–

एक ही एक अनेक होई विसरिओ, आनरे, आन भरपूरि सोऊ।[14]

इसी तरह एक जगह और ब्रहम की सार्वभौमिकता का उल्लेख द्रष्टव्य हैः–

द्रिस्टि अद्रिस्टि गेय अरु ग्याता
एकमेक है रविदासा।।[15]

इस तरह संत रविदास वाणी में ब्रहम के विभिन्न स्वरुपों का वर्णन परम्परानुसार ही अभिव्यक्त है।

ख) सत्यस्वरुप ब्रहमः– वैदिक दर्शन में सत्य को ही ब्रहम कहा है। सत्यस्वरुप ब्रहम का उल्लेख आरम्भ से ही भारतीय दर्शन में हुआ है। उपनिषदों में भी इसी परम्परा का अनुकरण दिखाई देता है। भागवत् दर्शन में ईश्वर के सत्यस्वरुप का उल्लेख प्रायः प्रत्येक अध्याय में है। एकं सत् विप्रः वहुधा वदन्ति में उस सत्यस्वरुप एक ईश्वर का ही उल्लेख है।
संत रविदास वाणी में इसे अत्यंत मनोरम अभिव्यक्ति मिली है। उनका एक पद तो केवल इसी सत्य स्वरुप ब्रहम की ही अभिव्यक्ति में गाया गया है।

मेरो मन सत्य स्वरुप विचारं [16]
आदि अंत अनन्त परम पद, संसा सकल निर्वैरं।

इस तरह के अनेक पद वाणी में पाए जाते हैं, जिनमें सत्यस्वरुप ब्रहम का स्पष्ट उल्लेख है।

ग) ज्योति स्वरुप ब्रहमः– भारतीय दर्शन में ब्रहम के अनेक स्वरुपों का उल्लेख मिलता है। जिन स्वरुपों में ब्रहम की सर्वाधिक अभिव्यक्ति मिलती है वह है ब्रहम का ज्योति स्वरुप वर्णन। वेदों में ज्योति स्वरुप की परम्परा थी, उपनिषदों में भी इसी परम्परा का उल्लेख मिलता है। कठोपनिषद् में निर्गुण ब्रहम को ज्योति स्वरुप एवं अनन्त प्रकाश के रुप में वर्णित किया गया है। कठोपनिषद् में उल्लेख है कि वहाँ न तो सूर्य ही प्रकाशित होता है, न चंद्रमा ही और न ही तारागण चमकते हैं। वहाँ विद्युत भी प्रकाश से आल्हादित नहीं करती, यह प्रकाश तो स्वतः उसी से प्रकाशित होता है।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारक नेमा विद्युतो भन्ति कुतो ययामिः।
तमेव भान्तमनु भाति सर्वं तस्य आसा सर्वमिदं विभाति।।[17]

संत गुरु रविदास जी ने भी वेदान्तानुसार अपने निर्गुण ब्रहम को परम–प्रकाष कहकर आत्म संतोष प्रकट किया है। उनकी इस तरह की अभिव्यक्ति इस पद में देखिएः–

परम–प्रकाश अविनाश अधमोचन, निरषि निजरुप विस्त्राम पाया।[18]

मुण्ड़कोपनिषद् में भी ज्योति स्वरुप ब्रहम का विशुद्ध उल्लेख मिलता है। यहाँ एक मंत्र में उल्लेख है कि परम ब्रहम जो प्रकाशमय, ज्योतियों की ज्योति है, उसे तो केवल आत्मज्ञानी ही जान सकते हैं।

हिरण्य मये परे कोषे, निरजं ब्रहम निष्कलम्।
तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तपदात्मविदो विदुः।।[19]

संत रविदास वाणी में भी इसी तरह के भावों से भरित एक पद देखिएः–

चहुँ दिसि दिवला बालि, जगिमगि है रहयो ऐ।
जोति जोति सम जोति, जोतिहि मिलि रहयो ऐ।।[20]

एक अन्य पद इसी तरह देखिएः–

तेज सरुपी सकल सिरोमनि, अलख निरंजन राव।[21]

इस तरह संत रविदास वाणी में ब्रहम (अव्यक्त) के ज्योतिस्वरुप ब्रहम का बहुत विस्तार से वर्णन हुआ है।

ब्रहम का व्यक्त सगुण रूप

संत रविदास वाणी में ब्रहम का संकल्प अत्यंत सरल रूप में मिलता है। वेदों उपनिषदों में सार तत्व के रूप में ब्रहम विषयक ज्ञान–गंड्गा धीरे–धीरे विभिन्न दर्शनों में परिपक्व होकर संत दर्शन तक पहुँचती प्रतीत होती है। इस लम्बे मार्ग में अनेक दर्शन, धर्मों ने अवश्य ही परस्पर प्रभावित किया होगा। नाथों सिद्धों तक वही वैदिक दर्शन शुष्क रूप में आगे बढा तथा संतों ने उसे ही अपनी अनुभूति से महिमामण्ड़ित कर सरल रूप में अभिव्यक्त किया। यही कारण है कि संतों की ब्रहम विषयक अभिव्यक्ति बहुआयामी है, तथा किसी पूर्वाग्रह से दबी हुई नहीं है। अपितु मुक्त अभिव्यक्ति के रुप में हमारे सामने आती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने एक जगह निर्गुण और सगुण ब्रहम की चर्चा करते हुए किसी बड़े विवाद को जड़ से उखाड़ते हुए स्पष्ट किया था कि ज्ञान के क्षेत्र में जिस ब्रहम को निर्गुण कहा जाता है, वही ब्रहम भक्ति के क्षेत्र में जाकर सगुण रुप में अभिव्यक्त हुआ है। सम्पूर्ण वैदिक परम्परा भी इसी ही तरह की है। निर्गुण ब्रहम के साथ–साथ उसके सगुण स्वरुप का वर्णन रूी उतना ही मनमोहक है। दोनों ही स्वरुपों का आधार श्रद्धा एवं धारणा पर निर्भर करता है। भागवत् दर्शन इसका सुन्दर उदाहरण है।

संत रविदास वाणी में भी ब्रहम के इन स्वरुपों का वर्णन मिलता है। कबीर की तुलना में संत रविदास की अभिव्यक्ति में अधिक कोमलता, सहजता एवं विषालता दिखाई देती है, कदाचित् वे संकीर्णता से मुक्त दिखाई देते हैं। संत रविदास ने ब्रहम के जिन व्यक्त (सगुण) रुपों का उल्लेख किया है, वे इस प्रकार हैंः–

क) भावना निर्मित ब्रहम का दिव्य स्वरुप
ख) ब्रहम का विराट स्वरुप
ग) ब्रहम का प्रतीकमय स्वरुप

क) भावना निर्मित ब्रहम का दिव्य स्वरुपः– मूलतः भक्त की भावना ही भगवत् प्राप्ति की प्रथम सीढी मानी जाती है। इस भावना के आवेश में भक्त ब्रहम की कई प्रकार से परिकल्पनाएँ करता हुआ उसे अपने सर्वाधिक समीप लाने, अनुभव करने का प्रयास करता है। वेदों–उपनिषदों में भी इसी प्रकार भावना निर्मित ब्रहम के अनेक स्वरुपों का वर्णन मिलता है। एकत्र ऋग्वेद में प्रभु के दिव्यस्वरुप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उस पुरुष (ब्रहम) के अनेकों ही सिर हैं, अनेक इसके पैर एवं हाथ हैं।[22]

संत रविदास जी ने भी ब्रहम के भावना निर्मित दिव्य स्वरुप का वैष्णव भक्ति की परम्परानुसार अत्यंत मनोरम रुप प्रस्तुत किया है। कहीं तो उनका ब्रहम उद्धारक रुप में अभिव्यक्त है, तो कहीं सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापक के रुप में अभिव्यक्त हुआ है।
उनका इस संदर्भ में एक पद देखिएः–

नीचहुं ऊँच करै मेरा गोबिन्द, काहु तैं न ड़रे
नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सघना सैनुं तरे
कहि रविदास सुनहु रे संतहु, हरि जिउ तैं सभै सरै।[23]

संत रविदास वाणी में अन्यत्र भी पतित–पावन, गरीब–निवाज़ आदि नामों से प्रभु के भावनामय विराट स्वरुप का उल्लेख मिलता है। इसी भावनामय स्वरुप के अंतर्गत उन्होनें अनेक मानवीय सम्बन्धों द्वारा अपने ब्रहम को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उनके मानवीय सम्बन्धों में अत्यन्त प्रसिद्ध सम्बन्धों का एक उदाहरण देखिएः–

1) स्वामी दास्यभावः– उन्होनें प्रभु को स्वामी एवं स्वयं को उस प्रभु का दास कहा है तथा एक तरह से प्रभु–भक्त में समीपता स्थापित करने का प्रयास किया है।

प्रभु जी! तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा।।[24]

अपनी इसी चेष्टा में उन्होनें भावना में प्रभु एवं भक्त के अनेक अनोखे रुपकों को भी गढने में कसर नहीं रखी है, कुछ ऐसे उदाहरण देखिएः–

क) चन्दन और पानी का सम्बन्धः– प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी
जाकी वास अंग अंग समानी।[25]

ख) घन और वन मोर का सम्बन्धः– प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा।
जैसे चितवत् चन्द चकोरा।।[26]

ग) दीपक और बाती का सम्बन्धः– प्रभु जी तुम दीपक हम वाती।
जाकी जोती जरै दिन राती।।[27]

घ) मोती और धागा का रुपकः– प्रभु जी तुम मोती हम धागा।
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।।[28]

ब्रहम का विराट स्वरुप

प्रभु के विराट स्वरुप की चर्चा भारतीय दर्शन की विशेषता मानी जाती है, क्योंकि ऋग्वेद से लेकर गीता, उपनिषद् एवं पुराणों तथा उनके बाद ब्रहम के विराट स्वरुप का मनमोहक वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया मिलता है। श्रीमद् भगवत् गीता में तो श्री कृष्ण अर्जुन को अपने विराट स्वरुप द्वारा आश्चर्य चकित करते ही हैं भगवत् दर्शन में भी ब्रहम के विराट स्वरुप की चर्चा मिलती है। वृहद्त्रयी में विशेषतः ब्रहमसूत्र में भी ब्रहम के विराट स्वरुप का उल्लेख मिलता है। मनुस्मृति में तो एक अध्याय ब्रहम की विराटता का अनूठा दृष्य प्रस्तुत करता है।[29] ऋग्वेद में ही उल्लेख है कि वह विराट स्वरुप ब्रहम तीनों लोकों में प्रसारित है।

संत रविदास वाणी में भी संत साहित्य की तरह ईश्वर (ब्रहम) की सर्वव्यापकता, विराटता, असीमित शक्ति एवं सर्वशक्तिमान होने की चर्चा सर्वत्र पाई जाती है। संत रविदास ने ब्रहम के विराट स्वरुप का उल्लेख करते हुए एक पद में कहा है कि वह ब्रहम (व्यक्त) तीनों लोकों में प्रसारित है।

बट कै बीज जैसा आकार, पसरयौ तीनि लोक पसार।[30]

वह विराट स्वरुप ब्रहम सर्वत्र चारों दिशाओं में व्याप्त है, वह निर्गुण अथवा सगुण दोनों रुपों में समान ही जाना जाता है।

अगुन सगुन दौ समकरि जान्यौ, चहुं दिस दरसन तोरा।[31]

वह विराट स्वरुप ब्रहम जिसके चरण पाताल हैं और सिर आसमान है, वह सीमित कैसे हो सकता है। उसकी सर्वव्यापकता एवं विराटता स्वयं अनुभव की जा सकती है।

चरन पतारि सीस असमानां, सो ठाकुर कैसे संपटि समानां।[32]

इसी तरह ब्रहम के भावना–निर्मित स्वरुप में भी उन्होनें उन्हें भक्त रक्षक एवं भक्त वत्सल प्रभु के रुप में शी अभिव्यक्त किया है।

रविदास दास की सेवा मानहु देवा, पतित पावन नाम परगट करीजै।[33]

वे प्रभु असीमित शक्ति से भरे हुए हैं, द्रौपदी की लाज को बचाकर भक्त रक्षक जैसे महिमा–मण्ड़ित रुपक ने उन्हें विभूषित किया है। जिस प्रकार द्रौपदी की लाज रखने में प्रभु ने देर नहीं लगाई, वैसे ही प्रभु भक्तों की लाज रखते हैं। एक उदाहरण देखिएः–

लज्या मोरि राखो श्याम हरि।
बसन प्रवाहित किओ करुनानिधि, तबहिं धीर धरि।
कहि ' रविदास ' सिंह सरनागति, स्याल की कहा ड़रि।।[34]

हे प्रभु तुम मेरी लाज रखना। तुमने अदृश्य रुप से द्रौपदी के लिए वस्त्र को प्रवाहित करके उसकी लाज रखी थी, तथा उसका सिर नीचे नहीं होने दिया था, मेरी भी तुम इसी तरह लाज रखना। संत रविदास कहते हैं कि मैं निरीह गीदड़ के समान तुम्हारा भक्त सिंह (ब्रहम) की शरण में आ गया हूँ। ऐसी अवस्था में अब मुझे भय काहे का अर्थात् तूं हीं मुझे संरक्षण देकर मेरा उद्धार कर सकता है, तभी तुम्हारा नाम भक्त रक्षक, भक्त वत्सल संसार में प्रसिद्ध एवं चरितार्थ होगा। तेरे भजन से कौन–कौन पापी पार नहीं हुआ। शबरी, अजामिल, सदना सब तेरी ही भक्ति से पार हो गए। अतः अब हे प्रभु मुझ पापी का भी उद्धार करके अपना नाम चरितार्थ कीजिए।[35]

सवरी गीध अजामिल सदना, राम कृपा गनका तरि जावत।
कवन कवन पापी जन तरिओ, कहि रविदास मनह नहीं आवत।।

गनिका थी किस करमा जोग, पर–पुरसन सौं रमती भोग।
निसि बासर दुस्करम कमाई, राम कहत बैकुंठे जाई।।

इस तरह प्रभु के भावना निर्मित स्वरुप के साथ–साथ प्रभु के विराट अर्थात् दिव्य स्वरुप का भी उल्लेख उनकी वाणी में सविस्तार मिलता है।

वस्तुतः भक्त ज्ञेय से अज्ञेय की ओर का अनुसरण करता हुआ अनेक ज्ञेय प्रतीकों द्वारा अज्ञेय से सान्निध्य स्थापित करने का प्रयास करता है। उपनिषदों में इस पद्धति के अनेक उदाहरण मिलते है तैतिरीयोपनिषद् में ब्रहम को अमूर्त प्रतीक, सत्य एवं अनन्त ज्ञान के प्रतीकों से भी वर्णित किया गया है।[36] इसी उपनिषद् में ही ब्रहम को अन्न, औषधि आदि के मूर्त प्रतीकों के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।[37] इसी तरह ब्रहम को प्राण और मन के प्रतीकों द्वारा भी अभिव्यक्त किया गया है।[38]

संत रविदास वाणी में भी ब्रहम को जीवन आधार, प्राणाधार स्वीकार किया हैः–

मोहि अधारु नामु नारायन, जीवन प्रान धन मोरे।[39]

एक अन्य उदाहरण में ' स्वाति–बूंद ' के प्रतीक के रुप में भी ब्रहम की अभिव्यक्ति की गई हैः–

साइर सलिल सरोदिका, जल थल अधिकाई।
स्वाति बूंद की आस है, पिउ पियास न जाई।।[40]

ब्रहम का बाजीगर रुपक ब्रहम के प्रतीक स्वरुप का बहुत सुन्दर उदाहरण है।

वाजीगर की वाजी कारनि, सब को कौतिग आवै।[41]

ब्रहम के प्रतीकमय रुपों में पारस[42] तथा लोन खड़ी [43] जैसे और भी अनेक प्रतीकों का प्रयोग वाणी में मिलता है।

इसी तरह नदी एवं समुद्र का रुपक भी इसी उद्देश्य से किया गया हैः–

जब लगि नदी समुद्र सम है, तब लगि बढै हुंकारा।
जब मन मिल्यौ राम सागर सूं, सब महु मिटी पुकारा।।[44]

इस तरह ब्रहम के विविध स्वरुपों का वर्णन संत रविदास वाणी में भी भारतीय दर्शन की सतत् परम्परा के अनुसार ही मिलता है।

संदर्भ सूची

1. एकं सद् विप्रा वहुधा वदन्ति – ऋग्वेद्
2. उपाध्याय, ड़ॉ0 बलदेव, भारतीय दर्शन, पृ0 – 40
3. येनेदं सर्वं विजानाति तं केन विजानीयात् – कठोपनिषद्
4. सं. र. वा. पद – 2
5. सं. र. वा. पद – 12, 10, 70
6. सं. र. वा. पद – 14
7. सं. र. वा. पद – 11
8. तस्य वाचकः प्रणवः – पातंजल योग सूत्र, 1–15
9. र. वा. पद – 1
10. सं. र. वा. पद – 1
11. सं. र. वा. पद – 2
12. र. वा. पद – 75
13. एकं सत् विप्राः वहुधा वदन्ति – कठोपनिषद्
14. र. वा. पद – 49, 71
15. र. वा. पद – 28
16. र. वा. पद – 71
17. कठोपनिषद् 2 – 2 – 15

18. र. वा. पद – 107
19. मुण्ड़कोपनिषद् – 2 – 2 – 6
20. र. वा. पद – 113
21. र. वा. पद – 98
22. सहस्त्र शीर्षाः पुरुषाः – ऋग्वेद्
23. र. वा. पद – 118
24. र. वा. पद – 66
25. र. वा. पद – 66
26. ..... उपरोक्त .....
27. ..... उपरोक्त .....
28. ..... उपरोक्त .....
29. मनुस्मृति अध्याय – ।।
30. र. वा. पद – 2
31. र. वा. पद – 73
32. र . वा. पद – 76
33. र. वा. पद – 9
34. र. वा. पद – 154, 139
35. र. वा. पद – 90
36. सत्यं ज्ञानअनन्तं ब्रहम तैतरीयोपनिषद् 2.1 – 2
37. अभाई प्रजाः प्रजापते ..... 2.2 – 1
38. सर्वमेव त आयु भ्रान्तं में प्राणं ब्रहमोयासते – तै0 2 – 3 – 1
39. र. वा. पद – 14
40. र. वा. पद – 21
41. र. वा. पद – 19
42. र. वा. पद – 19
43. र. वा. पद – 16
44. 44 र. वा. पद – 9